[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5925 **H**

Unique Paper Code : 2055002001

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **G.E. : Hindi A**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) बहुत दिनों बाद बाज़ारों में तुरेदार पगड़ियाँ और टोपियाँ नज़र आ रही थीं। लाहौर से आए हुए मुसलमानों में काफी संख्या ऐसे लोगों

P.T.O.

की थी, जिन्हें विभाजन के समय मजबूर होकर अमृतसर से जाना पड़ा था। साढ़े सात साल में आए अनिवार्य परिवर्तनों को देखकर कहीं उनकी आँखों में हैरानी भर जाती और कहीं अफ़सोस घिर आता– वल्लाह! कटरा जयमल सिंह इतना चौड़ा कैसे हो गया? क्या इस तरफ के सब–के–सब मकान जल गए? यहाँ हकीम आसिफ़ अली की दुकान थी न? अब यहाँ एक मोची ने कब्जा कर रखा है।

अथवा

अपने मूल रूपों में सुख और दुःख दोनों की अनुभूतियाँ कुछ बँधी हुई शारीरिक क्रियाओं की ही प्रेरणा प्रवृत्ति के रूप में करती हैं। उनकी भावना, इच्छा और प्रयत्न की अनेकरूपता का स्फुरण नहीं होता। विशुद्ध सुख की अनुभूति होने पर हम बहुत करेंगे – दाँत निकालकर हँसेंगे, कूदेंगे या सुख पहुँचाने वाली वस्तु से लगे रहेंगे, इसी प्रकार शुद्ध दुःख में हम बहुत करेंगे–हाथ–पैर

पटकेंगे, रोयेंगे या दुःख पहुँचाने वाली वस्तु से हटेंगे – पर हम चाहे कितना ही उछल-कूदकर हँसे, कितना ही हाथ-पैर पटककर रोयें, इस हँसने या रोने को प्रयत्न नहीं कह सकते। ये सुख और दुःख के अनिवार्य लक्षणमात्र हैं, जो किसी प्रकार की इच्छा का पता नहीं देते। इच्छा के बिना कोई शारीरिक क्रिया प्रयत्न नहीं कर सकती।

(ख) पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ में ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। लेटे-ही-लेटे गर्व से बोले, "चलो, हम आते हैं।" यह कहकर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए। फिर लिहाफ ओड़े हुए दारोगा के पास आकर बोले,

"बाबूजी, आशीर्वाद! कहिए, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गई। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए।

अथवा

हमारे शैशवकालीन अतीत और प्रत्यक्ष वर्तमान के बीच में समय-प्रवाह का पाट ज्यों-ज्यों चौड़ा होता जाता है, त्यों-त्यों हमारी स्मृति में अनजाने ही एक परिवर्तन लक्षित होने लगता है। शैशव की चित्रशाला के जिन चित्रों से हमारा रागात्मक संबंध गहरा होता है, उनकी रेखाएँ और रंग इतने स्पष्ट और चटकीले होते चलते हैं कि हम वार्धक्य की धुंधली आँखों से भी उन्हें प्रत्यक्ष देखते रह सकते हैं। पर जिनसे ऐसा संबंध नहीं होता, वे फीके होते-होते इस प्रकार स्मृति से धुल जाते हैं कि दूसरों के स्मरण दिलाने पर भी उनका स्मरण कठिन हो जाता है।

(ग) मन फिर घूम गया कौसल्या की ओर, लाखों-करोड़ों कौसल्याओं की ओर, और लाखों-करोड़ों कौसल्याओं के द्वारा मुखरित एक अनाम-अरूप कौसल्या की ओर, इन सबके राम बन में निर्वासित हैं, पर क्या बात है कि मुकुट अभी भी उनके माथे पर बँधा है और उसी के भीगने की इतनी चिंता है? क्या बात है कि आज भी काशी की रामलीला आरंभ होने के पूर्व एक निश्चित मुहूर्त में मुकुट की ही पूजा सबसे पहले की जाती है? क्या बात है कि तुलसीदास ने 'कानन' को 'सत अवध समाना' कहा और चित्रकूट में ही पहुँचने पर उन्हें 'कलि की कुटिल कुचाल' दीख पड़ी? क्या बात है कि आज भी वनवासी धनुर्धर राम ही लोकमानस के राजा राम बने हुए हैं? कहीं-न-कहीं इन सबके बीच एक संगति होनी चाहिए।

अथवा

भवानी! तुमने मेरे हृदय को कैसा कर दिया! मुझ बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। अपने लाल को दे सकूँ। यही राजपूतनी का व्रत है। यही राजपूतनी की मर्यादा है। यही राजपूतनी का धर्म है। मेरा हृदय वज्र का बना दो! माता के हृदय के स्थान पर पत्थर बना दो, जिससे ममता का स्रोत बंद हो जाए। भवानी! मैं चित्तौड़ की सच्ची नारी बनूँ।

2. निबंध-विधा का स्वरूप स्पष्ट करते हुए हिंदी निबंध के विकास-क्रम को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

व्यंग्य-विधा का परिचय देते हुए हिंदी साहित्य में व्यंग्य के विकास पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'मलबे का मालिक' कहानी विभाजन की त्रासदी को किस रूप में हमारे सामने रखती है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'नमक का दारोगा? कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

(15)

4. 'भाव या मनोविकार' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध की केंद्रीय भावना को अभिव्यक्त कीजिए। (15)

5. 'दीपदान' एकांकी का मूल संदेश स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सुभद्रा के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(15)

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए –

(क) कहानी के तत्त्व

(ख) रेखाचित्र की विशेषताएँ (6)